सूकर पालनः एक लाभकारी व्यवसाय

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जिसमें लगभग दो तिहाई आबादी गांवों में रहती है जो प्रमुखतः कृषि एवं पशुपालन से अपनी जीविका का अर्जन करती है। सूकर पालन भी पशुपालन के अंतर्गत आने वाला एक प्रमुख व्यवसाय है, जिसको यदि वैज्ञानिक पेति से किया जाए तो कम लागत व कम समय में अधिक लाभ कमाया जा सकता है।

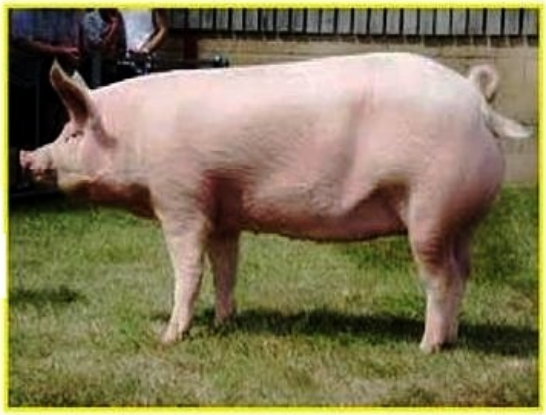

पशुगणना 2012 के अनुसार हमारे देश में लगभग 1 करोड़ सूकर है, जिसमें सर्वाधिक संख्या आसाम राज्य में है एवं इसके बाद दूसरा स्थान उत्तरप्रदेश का है। सामान्यतः सूकर पालन निम्न तबके के लोगों से जुड़ा हुआ व्यवसाय है एवं इस व्यवसाय से जुड़ी हुई सामाजिक मान्यताओं के कारण सूकर पालन के प्रति आमजन की सोच आज भी नकारात्मक बनी हुई है, लेकिन यदि इस व्यवसाय को वैज्ञानिक पेति से बड़े स्तर पर किया जाए तो इससे होने वाला मुनाफा बहुत ही आकर्षक है, क्योंकि सूकर पालन के साथ कुछ ऐसी विशेषताएं जुड़ी हुई हैं जो अन्य पशुओं में देखने में नहीं मिलती है। यह विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

- सूकरों में प्रजनन की उच्च क्षमता होती है। मादा सूकर एक साल की उम्र तक प्रजनन योग्य हो जाती है एवं एक बार की ब्यांत में लगभग 8 से 12 बच्चों को जन्म देती है। चूंकि सूकरों का गर्भधारण काल लगभग 115 दिन होता है, इसलिए अच्छा प्रबंधन होने की स्थिति में एक साल में दो ब्यातें प्राप्त की जा सकती हैं। इस तरह मादा सूकर से एक साल में 15 से 20 बच्चों की प्राप्ति संभव है, जो अन्य चौपायों की तुलना में बहुत ज्यादा है।
- सूकरों में निम्न गुणवत्ता वाले खो पदार्थों को मांस में बदलने की उच्च क्षमता होती है। सामान्यतः सूकर को एक किलो वजन बढ़ाने के लिए लगभग तीन किलो दाना या राशन की आवश्यकता होती है। जन्म के समय पिग्लेटस (नवजात बच्चे) का वजन एक किलो के आसपास होता है जो उचित देखरेख होने पर 8 महीने की उम्र तक आते-आते 60 से 80 किलो तक हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि सूकरों का वजन बहुत तेजी से बढ़ता है और 8 से 10 महीने की उम्र के सूकर बाजार में बेचने के लिये उपर्युक्त होते हैं।
  सूकर पालन में विभिन्न प्रकार के खो पदार्थों जैसे- दाना, टूटा अनाज, चारा, किचिन, हॉस्टलों की मैसों व होटलों से प्राप्त जूठन, कृषि सह उत्पादों इत्यादि को उपयोग में लाया जा सकता है।
- सूकरो के लिए आवास निर्माण में होने वाला खर्चा अपेक्षाकृत कम होता है। साथ ही सूकरों की देखभाल के लिए कम संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता होती है एवं सामान्य किसान भी सूकर पालन संबंधी प्रारंभिक प्रशिक्षण के बाद यह व्यवसाय आसानी से कर सकते हैं।
- सूकरों से अन्य चौपायों की तुलना में अधिक मांस (मीट) प्राप्त होता है। सूकरों से उनके वजन का लगभग 65 से 70 प्रतिशत तक मांस मिलता है, जबकि भेड़ बकरियों से उनके वजन की तुलना में 50 से 55 प्रतिशत मीट ही मिलता है।
- सूकर पालन से मीट के अलावा विभिन्न प्रकार के उत्पाद प्राप्त होते हैं जैसे कि रक्त का उपयोग ब्लड मील बनाने में, बालों से ब्रश बनते है, खाल से चमड़े के उत्पाद बनाए जाते हैं, हड्डियों से बोन मील बनता है एवं खुरों का प्रयोग ग्लू बनाने में किया जाता है।
- सूकर पालन में शुरूआती लागत कम होने के कारण निम्न आय वर्ग के किसान, खेतिहर मजदूर भी आसानी से इस व्यवसाय को शुरू कर सकते हैं।
- सूकर के मीट में ऊर्जा की मात्रा तुलनात्मक रूप से ज्यादा होती है। साथ ही इसमें कुछ विटामिन्स जैसे-थायमीन, नियासिन, राइबोफ्लेबिन की प्रचुर मात्रा पाई जाती है।
- सूकरों के मलद्रमूत्र (पिग मेन्योर) में नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटेशियम की औसत मात्रा क्रमशः 0×70 प्रतिशत, 0×68 प्रतिशत एवं 0×70 प्रतिशत होती है, जिसके उपयोग से भूमि की उर्वरक क्षमता बढ़ाने में मदद मिलती है। इसका उपयोग मछली पालन के तालाबों में उर्वरक के रूप में भी किया जा सकता है।
- सूकर पालन को अन्य व्यवसायों जैसे मछली पालन, बत्तख पालन से जोड़कर मुनाफे को और अधिक बढ़ाया जा सकता है।